ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.IX/March 2012pp.1-4

Research Paper

प्रेमचंद के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन

प्रा. डॉ. लोंढे रामचंद्र मारूती
क्रांतिसिंह नाना पाटील महाविद्यालय, ता. वाळवा, जि. सांगली

मनुष्य समाजशिल प्राणि है। वह समाज में रहते हुए अपने कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशिल रहता है। उसका कल्याण एवं प्रगति, विकास एवं हित समाज पर ही निर्भर रहता है। मनुष्य के जीवन के सुख—दु:ख, हार—जीत, विनाश एवं विकास आदि का व्यापक रूप में विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत शोध आलेख है।

समाज शब्द का अर्थ एवं परिभाषाएँ:—

वास्तविक रूप में 'समाज' शब्द का प्रयोग मानव 'समूह' के लिए किया जाता है। किंतु इससे समाज शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। 'समाज' शब्द एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होता है। जिसे स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानोंने अलग—अलग परिभाषाओं के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। प्रो.राईट समाज की परिभाषा स्पष्ट करते हुए कहते है, ''मनुष्यों के समूह को समाज नहीं कहा जाता, अपितु समूह के अंतर्गत व्यक्तियों के सम्बन्धों की व्यवस्था का नाम समाज है।''[१] वह सामाजिक संबंध जो एक दूसरे को प्रभावित करें समाज है।''[२] तथा समाज की परिभाषा स्पष्ट करते हुए गिडिंग्स ने इस ढंग से स्पष्ट किया है। इससे स्पष्ट होता है कि समाज स्वयं एक संघ है, संगठन है, औपचारिक संबंधों का योग है। जिसमें सहयोगी व्यक्ति परस्पर आबध्द है।

समाज मनुष्य के सामाजिक जीवन का मूर्त रूप है। जिस पर वंश, परंपरा, परिवेश, संस्कृति, वैज्ञानिक बोध एवं पध्दतियाँ एवं नैतिक विचार प्रणातियों का तथा रीतियों का भी प्रभाव रहता है। ये तत्त्व यद्यापि स्वत: समाज नहीं है, तथापि ये उसके विधिवत प्रकाशन में योगदान करते रहते है। अर्थात समाज, व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं है बल्कि सामाजिक संबंधों एवं समस्याओं का गहन जाल है। समाज के लिए शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की समानता, एकरूपता अनिवार्य है। इसी समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण समाजशास्त्री करते है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण :—

सोशियोलॉजी का शाब्दिक अर्थ है — समाज से संबंधित विज्ञान जो समाज का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करता है। मैक्स वेबर के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो कि सामाजिक क्रिया का अर्थपूर्ण बोध करने का प्रयत्न करता है। जिससे कि इसकी गतिविधि तथा परिणामों कारण सहित व्याख्या प्रस्तुत की जा सके। उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों की विवेचना करता है। आधुनिक समाज में समाजशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आज का साहित्य, समाज का ही

प्रतिफल है। तथा समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों एवं समस्याओं पर मनन, चिंतन, विश्लेषण करता हैं।

भारतीय समाज में सबसे लोक प्रिय विधा उपन्यास है। मनुष्य के जीवन के व्यापक, गंभीर तथा यश—अपयश, अच्छा—बुरा, सत्य—असत्य, आदि को अभिव्यक्त करने के लिए कथा का सहारा लेना पडता है। वह दुनिया के कोने—कोने तक जा सकता है। उपन्यास में मनुष्य के पूरे जीवन का चित्रण होता है। किसी भी घटना का जितना विस्तृत विवरण वह प्रस्तुत कर सकता है, उतनी छूट कवि या नाटककार को नहीं मिल सकती। उपन्यासकार एक सामाजिक प्राणि नहीं रह सकता। आ शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास इस ग्रंथ में लिखा है ''लोक या किसी जन—समाज के बांध काल की गति के अनुसार जो गूढ और चिंताजनक परिस्थितियाँ खडी होती है, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी—कभी विस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना है उपन्यास का काम है।''[३] सफल उपन्यासकार का सबसे बडा लक्षण है कि वह अपने पाठकों के हृदय में उन्हीं भावों को जागृत कर दे जो उसके पात्रों में हो। पाठक भूल जाये कि वह कोई उपन्यास पढ़ रहा है उसके और पात्रों के बीच में आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाये। मानव चरित्र ही पूरी सृष्टि के केन्द्र में है। वही परिस्थितियों से प्रभावित होता है, प्रभावित करता है। वह सामाजिक संबंधों तथा परिस्थितियों के अनुसार एक विशेष प्रकार का रूप धारण करता है, एक विशेष प्रकार की जिंदगी भोगता है। उसके अन्तर्जगत इस बाहय जगत् को प्रभावित करने के लिए अनेक संकल्प—विकल्प करता है कभी सक्रीय रूप से, कभी निष्क्रिय रूप से समाज सापेक्ष होने के कारण उपन्यास का समाजशास्त्रीय महत्त्व है।

प्रेमचंद के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययनः—

प्रेमचंद्र के उपन्यासों की मूल पृष्ठभूमी समाजकल्याण की भावना है। उनके उपन्यासों का केन्द्र बिंदू सामाजिक जीवन है। उन्होंने मानव के माध्यम से व्यक्ति की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद व्यक्ति को व्यक्ति की दृष्टि से नहीं, सामाजिक दृष्टिकोण से आँकते है। समाज का मंगल एवं कल्याण उनका लक्ष्य हैं। प्रेमचंद साहित्य को जीवन की आलोचना मानते है और जीवन को उन्होंने समाज की सापेक्षता में देखा व परखा हैं इसी संदर्भ में वे लिखते है, ''साहित्य की प्रवृत्ति अंहवाद या व्यक्तिवाद तक परिमीत नहीं रही, बल्कि वह मनोवैज्ञानिक और सामाजिक होता जाता है। अब वह व्यक्ति को समाज से अलग नहीं देखता, किंतु उसे समाज के एक अंग रूप से देखता है।

समाज में दिन—दलित, किसान, नारी, पूँजीपति वर्ग, साहूकार आदि अनेक घटकों का मुख्य रूप से चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। वे कहते है, ''हम तो समाज का झण्डा लेकर चलनेवाले सिपाही है और सादी जिदंगी के साथ ऊँची निगाह हमारा लक्ष्य है।''[४] इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद और समाज के पारस्परिक संबंध का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया जाता है कि प्रेमचंदजी ने मनुष्य के जीवन का पूरा चित्र उपन्यासों में खिंचा है जो इस वर्ग के जीवन को प्रभावित करता है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के प्रति उनकी सुधारवादी भावना ने ही उनके दृष्टिकोण और

विचारधारा का निर्माण किया था प्रेमचंद जी साहित्य को लेकर कहते है, ''मेरे किस्से प्राय: किसी न किसी प्रेरणा अथवा अनुभव पर आधारित होते है — उनमें मैं नाहक के रंग भरने की कोशिश करता हूँ। में उसमें किसी दार्शनिक और भावनात्मक सत्य को प्रगट करना चाहता हूँ। जब तक इस प्रकार का कोई आधार नहीं मिलता मेरी कलम ही नहीं उठती। आधार मिल जाने पर मैं पात्रों का निर्माण करता हूँ। कई बार इतिहास के अध्ययन से भी प्लाट मिल जाते है। लेकिन कोई घटना कहानी नहीं होती जब तक वह किसी मनोवैज्ञानिक सत्य को व्यक्त न करे।''[५] इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक जीवन अपने समस्त संबंधों जटिल प्रश्नों और समस्याओं, आशाआकांक्षाओं के साथ उभरा है, इसीलिए उनके पात्र विशेषत: सामाजिक या वर्गिय पात्र है। लेखक इन पात्रों की विशेषताओं को खूब उबारता है, उनसे उनका व्यक्तित्व निर्मित करता है और परिस्थितियों के प्रवाह में उठते—गिरते उस पात्रों की मन: स्थितियों का आकलन करता है। लेखक प्रेमचंद जी ने उन पात्रों के सामाजिक रूप और सामाजिकता से संबंधित मन: सत्यों को अपनी रचनाओं में उद्‌घाटित करने पर बल दिया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों का राजनीतिक पक्ष :—

प्रेमचंद जी महात्मा गांधीजी के विचारों से प्रभावित हुऐ थे। उन्होंने अपने उपन्यासों में गांधी के असहयोग आन्दोलन, स्वतंत्रता संग्राम तथा सामाजिक कुरीतियों और विभीषिकाओं है। ''मेरी अभिलाषाएँ बहुत सीमित हैं। इस समय बडी अभिलाषा यही है कि हम अपने स्वतंत्रता संग्राम में सफल हो।''——— हॉ यह जरूर चाहता हूँ कि दो चार उच्चकोटि की रचनाएँ छोड जाऊँ, लेकिन उनका उद्‌देश्य भी स्वतंत्रता प्राप्त हो।''[६] प्रेमचंद गॉधी के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे । मैं महात्मा गांधी को सबसे बडा मानता हूँ । उनका भी उद्‌देश्य यही है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हो, वह उन लोगों को आगे बढाने के लिए आंदोलन मचा रहे हैं, मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूँ ।''[७]

प्रेमचंदजी लिखित 'प्रेमाश्रम' में प्रेमशंकर से प्रेरणा गृहण कर जहॉ एक और माया शंकर अपने राजतिलक के अवसर पर अपनी भूमि किसानों में बॉट देता है, वही दूसरी ओर सत् प्रयत्नों से लखनऊ और हाजीपुर में रामराज्य की स्थापना होती है। 'कायाकल्प' में प्रेमचंद ने गांधीवादी सिध्दातों के नैतिक पक्ष का प्रतिपादन करते हुए भोगविलास और उसके व्दारा होनेवाले नैतिक पतन की पराकाष्ठा का चित्रण किया है। राजा बनने से पूर्व प्रजाहित की लम्बी चौडी बातें करने वाला राजा विशालसिंह अधिकार मिलने पर अत्याचार किए बिना नहीं रहता ''सारा देश गुलामी की बेडियों में जकडा हुआ हैं, फिर भी इम अपने भाईयों की गर्दन पर छुरी रखने से बाज नहीं आते..... जिनसे लडना चाहिए उनके तो तलवे चाटते है और जिनसे गले मिलना चाहिए, उनकी गर्दन दबाते है और सारा जुल्म हमारे पढे लिखे भाई ही कर रहे है।''[८] हिंदी साहित्य के उपन्यास सम्राट प्रेमचंदजी ने अपने उपन्यास साहित्य में यह स्पष्ट किया है कि, निम्न एवं मध्यवर्गीय व्यक्ति के समक्ष अनेकानेक आर्थिक समस्याॅए मुॅह बायें खडी हुई है। निर्धन व्यक्ति

दिन—प्रतिदिन निर्धनता के गर्त में डुबता चला जा रहा है। किसानों के शोषण का भी उन्होंने हमेशा विरोध किया है । महाजनी सभ्यता ने किसान एवं जमींदार को अपने चंगुल में फॅसा रखा हैं जिसमें किसान मजदूर बनकर अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। भूख, बीमारी, जडता और वेदना से पूर्ण परंपरा जीवी होरी अपनी मरजाद की रक्षा में सब कुछ, यहॉ तक कि अन्त मजदूर बन अपनी जान तक होम कर देता है। प्रेमचंद के उपन्यासों के मध्यवर्ग में आत्मप्रदर्शन अथवा ऑड्म्बर प्रियता के दर्शन होते है। अभिजात्य वर्ग तक पहुॅचने की इस वर्ग की अभिलाशा आर्थिक अभावों के कारण कुठिंत हो जाती है। 'सेवसदन' के आरंभ में इसे भली—भॉति दर्शाया गया है । प्रेमचंद को किसी भी सर्वज्ञ भगवान में विश्वास नहीं था। उनका विचार था कि, ''धर्म परलोक के व्दारा खोल देने के बजाय इस लोक को सुखी बनाने का मुख्य साधन होना चाहिए।'' धर्म के नाम पर सभी ऑड्म्बर व कर्मकाण्डों का उन्होंने अपने रचनाओं में जम कर विरोध किया। वे अपनी शिवरानी देवी से कहते है, ''जो भी आज धर्म के नाम पर हो रहा है, सब अन्धविश्वास है। यव सब मूर्खों को बहकाने के तरीके है।''[७]. सेवा सदन में गजाधर सुमन से उपर्युक्त कथन के समर्थन में कहते है'' तो तुमने उन लोगों के बडे—बडे तिलक—छापे देखकर ही उन्हें धर्मात्मा समझ लिया। आजकल धर्म तो धूर्ती का अड्डा बना हुआ है। इस निर्मल सागर में एक से एक मगरमच्छ पडे है। भक्तों को निगल जाना उनका काम है।

'गबन' रमानाथ के माध्यम से इसे सर्वोत्कृष्ट वर्णित किया गया है। हर एक मध्यवर्गिय की कोशिश होती है कि उसके पास बहुत साधन हो। उसके सगे संबंधी और संगी साथी उसे धन्नाशा समझकर उसका सम्मान करें । इसी प्रवृत्ती के कारण ही समाज में उत्कोच की प्रथा का बाहुल्य है। सरकारी और गैर सरकारी दोनों ही विभागों में इसका प्रचलन इतना अधिक हो गया है कि छोटे से छोटे कार्य निमित्त धनी वर्ग लाखों रूपये रिश्वत के रूप कर्मचारियों को दे देते हैं। प्रेमचंद ने लोगों की इस बढती हुई महत्वाकांक्षा को परख लिया था। मानवतावादी प्रेमचंद गोदान में मेहता के रूप में अपने अनीश्वरवादी विचारों को खुलकर व्यक्त करते है।

प्रेमचंद युग के साहित्य में भारतीय जीवन के विविध पक्षों के युगीन आदर्श रूप प्राचीन सांस्कृतिक विचारों एवं नवीन बौध्दिक राजनीतिक धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षणिक पक्षों का अनुशीलन करें तो कहा जा सकता है कि प्रेमचंद की कला और प्रतिभा में पूर्ण अस्था है । उसके उपन्यासों के माध्यम से समाज, संस्कृति, धर्म और राजनीति के यथार्थ चित्र उपलब्ध होते हैं। प्रेमचंद ने अपनो उपन्यासों में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का चित्रण करते हुए उन्हें दूर करने के उपाय भी बताए हैं तथा उनकी लोक जीवन की समाशास्त्रीय व्याख्या, आलोचना भी प्रस्तुत की है। उन्होंने अपने उपन्यासों को सामाजिक मनोविश्लेषण के आधार पर जॉचा परखा एवं समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने समाज में हो रहे शोषण का विरोध किया तथा सामाजिक संकीर्णताओं को तोडने की चेष्टा की, जनता को जगाया और जनवादी परंपरा को आगे बढाया । उन्होंने समाजगत की एवं जीवनगत विभिन्न गंभीर समस्याओं को अपने उपन्यासों का कश्प बनाया और उन समास्यों के हल भी प्रस्तुत किये।

संदर्भ :—

१. Wright – 'Elements of Sociology' पृ.क्र. 2
२. मैकाइवर आर.एन. पेज 'सोसायटी' पृ.क्र.५
३. आ. रामचंद्र शुल्क 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पृ.क्र. ५३५
४. प्रेमचंद साहित्य का उद्देश पृ.क्र. १८
५. डॉ. इन्दनाथ मदान प्रेमचंद : जीवन और कृतित्व पृ.क्र. १९३
६. श्री. बनारसीदास चतुवैदी को प्रेमचंद व्दारा लिखे दिनांक ३/६/३० से उध्दृत
७. शिवरानी देवी— प्रेमचंद घर में पृ.क्र. १२८
८. प्रेमचंद — कायाकल्प पृ.क्र. १२८
९. शिवरानी देवी— प्रेमचंद घर में पृ.क्र. १२३